१३. परिषद् प्रगति : बढ़ते चरण

परिषद् प्रगति बढ़ते चरण

वैष्णव परिषद् : प्रगति के बढ़ते चरण - श्री कुमनदास झालानी, प्रधानमंत्री १

राजस्थान राज्य में परिषद् : १६

मध्यप्रदेश राज्य में परिषद् : १८

जयति वैष्णव परिषद्

आज तक जिसने परिषद् की सेवा की है, उसे प्रभु ने श्रेष्ठ फल ही दिया है, लौकिक और पारलौकिक सब कुछ वे ही करेंगे

—प्रथमेश

वैष्णव परिषद् : प्रगति के बढ़ते चरण

- श्री कुमनदास झालानी, प्रधान मंत्री

यह निर्विवाद सत्य है कि किसी भी कार्य अथवा प्रयोजन के लिये किसी भी क्षेत्र में चाहे परिवार हो, समाज हो, संस्था हो या राष्ट्र हो, संगठन की आवश्यकता के संवंध में दो मत हो ही नहीं सकते । सुदृढ़ संगठन के अभाव में बिखराव होता ही है और सार्वजनिक हित के कार्य सम्पन्न नहीं हो सकते । पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् की स्थापना भी इसी आधार पर हुई । मुख्य रूप से इसका श्रेय जाता है पूज्यपाद गोस्वामी श्री जीवनलालजी महाराज पोरबंदर वालों को और उनके सहयोगियों को ।

आपश्री ने देशकाल की परिस्थितियों का विशद अध्ययन किया और स्वधर्म के प्रति अज्ञान तथा उदासीनता, संस्कृतिविहीन शिक्षा, प्रामाणिक साहित्य का अभाव आदि समस्याओं को देखते हुये एक मध्यवर्ती (क्षेत्रीय) संस्था की आवश्यकता समझी और इस ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया । इसके फलस्वरूप दिनांक १४-७-१९०६ को श्रीमद् वैष्णव परिषद् की स्थापना हुई । अमरेली वाले पू. पा. गो. श्री पुरुषोत्तमलालजी महाराज, प. भ. श्री रणछोड़दासजी, श्री वृन्दावनदासजी पटवारी, श्री लल्लूभाई प्राणवल्लभजी पारीख, श्री मगनलालजी, श्री गणपतरामजी शास्त्री, सेठ चिमनलालजी, सामलदासजी आदि का समर्थन एवं सहयोग मिला ।

इस परिषद् के प्रथम अधिवेशन में संप्रदाय के सिद्धान्तों के प्रचार, प्रसार और साहित्य प्रकाशन द्वारा पठन-पाठन श्रवण शिक्षा आदि के लिए प्रयत्न किये जाने का संकल्प हुआ ।

इस परिषद् के अपने ५० वर्ष की अवधि में सन् १९५६ तक आठ प्रमुख अधिवेशन हुए - (१) सन् १९०६ में बड़ौदा में गोस्वामी श्री जीवनलालजी महाराज की अध्यक्षता में धर्माध्यक्ष गो. श्री अनिरुद्धलालजी महाराज (नडियाद) थे तथा व्यवहार अध्यक्ष श्री रणछोड़दासजी पटवारी । (२) सन् १९०८ में पाटन में व्यवहार अध्यक्ष श्री सेठ चतुर्भुज दासजी मोरारजी थे । (३) सन् १९०९ में नन्दुरबार में - इस अधिवेशन में श्री इच्छारामजी भट्टजी द्वारा रचित अणुभाष्य की टीका प्रस्तुत की गई । (४) सन् १९१० में सूरत में पू. पा. गो. श्री वृजरललालजी महाराज के लग्न प्रसंग के अवसर पर । (५) १९२० में पूना में - इस अधिवेशन में गो. श्री जीवनलालजी महाराज, गोपेश्वरलालजी महाराज, वृजरललालजी महाराज एवं चार छः अन्य गो. बालकों ने भी भाग लिया । लोकमान्य श्री बालगंगाधर तिलक भी इसमें उपस्थित हुए थे । (६) सन् १९२१ में सिन्धनगर ठट्टा में - गो. श्री रणछोड़लालजी महाराज पोरबंदरवालों की अध्यक्षता में । (७) सन् १९२५ में बम्बई में पू. पा. गो. श्री गोकुलनाथजी महाराज की प्रेरणा से । (८) सन् १९४२ में

नडियाद में गो. श्री कृष्णजीवनजी महाराज की अध्यक्षता में व्यवहार अध्यक्ष प. भ. श्री वाडीलाल भाई शाह थे । पू. पा. गो. श्री दीक्षितजी महाराज भी इसमें सम्मिलित हुए थे।

इन ५० वर्षों की अवधि में साहित्य निर्माण एवं संप्रदाय के प्रचार-प्रसार आदि में जिन महानुभावों ने अपनी सेवाएं प्रदान की उनमें प. भ. सर्वश्री गट्टूलालजी, श्री मगनलालजी शास्त्री, श्री वसन्तरामजी तेलीवाला, श्री लल्लूभाई, श्री नानुभाई, श्री जटाशंकरजी, श्री बद्रीनाथजी, श्री हरिशंकरजी, श्री जेठारामजी, श्री चिमनभाई आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस अवधि में जो साहित्य निर्माण एवं प्रकाशन का क्रम आरंभ हुआ वह अत्यधिक महत्व का रहा और उसकी गति अभी भी बनी हुई है । इस कार्य से अनेक संस्थाओं को मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त हुई और उन्होंने इस कार्य को अपनाया । इससे वैष्णव समाज को काफी गौरव भी प्राप्त हुआ ।

यह सब होते हुए भी पुष्टि सृष्टि के संगठन में व्यापकता और निरन्तरता जेसी होना चाहिये थी वह नहीं हुई और उसका अभाव दृष्टिगोचर होता रहा था । इसके साथ ही सम्प्रदाय के प्रति बढ़ती उदासीनता, कर्तव्य-विमुखता, आपस में छिद्रान्वेषण, निंदा स्तुति, असहिष्णुता आदि देखकर आचार्यों ने एक सुगठित व्यापक हित वाली संस्था की कल्पना की और पू. पा. गो. श्री घनश्यामलालजी महाराज, कामवन वालों के सद्प्रयत्नों एवं प्रेरणा से अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् के रूप में आश्विन कृष्ण ३ संवत २०१३ (१३-६-१९५६) को जतिपुरा में परिषद् का पुनरुद्भव हुआ । इसका उद्घाटन पू. पा. श्री रणछोड़ाचार्यजी महाराज, 'प्रथमेश' द्वारा हुआ और गोस्वामी श्री पुरुषोत्तमलालजी महाराज कोटा वाले प्रमुख मनोनीत हुए । प्रधानमंत्री का पद श्री नारायणजी, पुरुषोत्तमजी सोगानी को मिला किन्तु एक माह पश्चात् ही उनके त्यागपत्र आ जाने से श्री द्वारकादासजी पारिख प्रधानमंत्री मनोनीत हुए । परिषद् के विधान बनाने का दायित्व श्री रणछोड़ाचार्यजी महाराज को सौंपा गया ।

परिषद् का प्रथम व्यापक अधिवेशन १७, १८, १९ मई १९५७ को बड़ोदा में हुआ। इसमें करीब २५ गोस्वामी बालक और १०,००० से अधिक वैष्णवजन थे । इस अवसर पर पोरबंदर के गोस्वामी श्री राकेशलालजी महाराज ने प्रवचन में व्यक्त किया था कि वैष्णव समाज रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं - एक वल्लभ कुल और दूसरा वैष्णव समाज। दोनों संग मिलकर प्रगति करें । तभी हम आगे बढ़ सकते हैं । इस अधिवेशन का उद्घाटन पू. पा. गो. श्री वृजरललालजी महाराज सूरत वालों ने किया था और अनेक गोस्वामी बालकों तथा विद्वानों के प्रेरक प्रवचन हुए थे ।

परिषद् का उद्देश्य श्रीमद् वल्लभाचार्य चरण द्वारा प्रवर्तित शुद्धाद्वैत पुष्टि भक्ति मार्ग का अध्ययन, अन्वेषण एवं प्रतिपादन करना है । इस मार्ग के अनुसार मानव मानसिक शांति की प्राप्ति हेतु संसार में रहते हुए भी और अपने समस्त लौकिक एवं वैदिक कार्य

करते हुए भी आध्यात्मिक जीवन यापन कर सकता है । इसमें न वर्ग भेद है न वर्ण भेद है । छोटे या बड़े, स्त्री या पुरुष, गरीब या अमीर सभी इसका पालन अत्यंत सरलता एवं सुगमता से कर सकते हैं । इसमें जीवन का, सामाजिक व्यवहार का, प्रेम का, भाईचारे का सभी का ध्यान रखा गया है । मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य का भी ध्यान है । जीवन की ललित कलाओं का भी इसमें महत्व है । इस प्रकार इस मार्ग में स्वस्थ एवं उन्नत जीवन के लिए आवश्यक सभी अंगों का सुन्दर समावेश एवं समन्वय है । मानव के आध्यात्मिक जीवन का समष्टि के हित में सर्वांगीण विकास करने का यह अति सरल उपाय है । इसके पालन से जीवन में रस की, मधुरता की, शांति की और आनन्द की अनुभूति होती है । सुख एवं सन्तोष की प्राप्ति होती है । प्रभु में और समष्टि में आत्मीयता होती है परन्तु व्यक्तिगत अंहता और ममता से छुटकारा मिलता है । तात्पर्य यह है कि मनुष्य गृहस्थ में रहकर भी सन्त बन सकता है । ऐसे सहज एवं सुन्दर मार्ग के सिद्धान्तों को समझना, उनका मनन एवं चिंतन करना और उनका पालन करना प्रत्येक मानव का कर्तव्य हो जाता है ।

इन सिद्धान्तों के प्रचार, प्रसार के लिये प्रशिक्षण एवं साहित्य प्रकाशन के अतिरिक्त पाठशालाओं एवं पुस्तकालयों की स्थापना और संचालन करना परिषद् के मुख्य उद्देश्य निर्धारित किये गये । परिषद् का यह भी प्रयत्न रहा कि समाज में व्यापक कमजोरियां दूर हों, धार्मिक परम्पराओं का शुद्ध रूप में प्रचार हो । मानव का नैतिक एवं आर्थिक स्तर ऊंचा हो और प्रेम सहयोग एवं कर्तव्य ज्ञान की वृद्धि हो । अपने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परिषद् ने विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियां अपनाई जो मुख्य रूप से इस प्रकार हैं ।

शिक्षा एवं सेवा कार्य :-- स्थान स्थान पर बाल मंदिर, सेवा सदन, वनिता विकास वीथि, पी. पी. एस. आदि के माध्यम से सेवा कार्य हुए तथा धर्म संस्कार शिविर, कार्यकर्ता शिविर के आयोजन होते रहते हैं ।

प्रकाशन :-- सस्ता सुलभ एवं प्रामाणिक साहित्य-प्रकाशन के लिए समय समय पर प्रयत्न किये गये और प्रकाशन के लिये एक स्थायी निधि बनाने का भी १९८० में निर्णय लिया गया । इस निधि में सभी शालाओं से सहयोग राशि प्राप्त करने का संकल्प लिया गया । परिषद् के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप हो जाने पर एक स्वतंत्र किन्तु परिषद् के अंतर्गत श्री वल्लभ प्रकाशन न्यास की स्थापना हुई । और उसमें यह रकम जमा करा दी गई न्यास के अतिरिक्त अनेक शालाओं द्वारा भी समय-समय पर ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया । इन्दौर शाखा इस कार्य में प्रमुख रूप से सक्रिय है ।

वल्लभाचार्य जन कल्याण प्रन्यास :-- पूज्य प्रथमेशजी की प्रेरणा से १९७४ में वल्लभाचार्य जन कल्याण प्रन्यास का गठन हुआ । इसके अंतर्गत पुरुषोत्तम सेवा सदन जतीपुरा, गोवर्धन गोशाला, अन्न क्षेत्र आदि का कार्य प्रारंभ हुआ । आदिवासी क्षेत्र झाबुआ में वल्लभ वाल विद्या निकेतन भी इसके अंतर्गत प्रारम्भ हुआ ।

मुख पत्र :-- प्रारम्भ में परिषद् की गतिविधियों के लिए परिषद् सन्देश पत्रिका प्रकाशित होती रहती थी किन्तु अर्थाभाव के कारण इसके प्रकाशन में गतिरोध होने लगा था । सन् १९६३ में 'श्री वल्लभ विज्ञान', ने जो इन्दौर से १९६० से मासिक के रूप में प्रकाशित हो रहा था, परिषद् की गतिविधियों के प्रसारित करने के लिए कुछ स्थान देने का निर्णय किया । इसके एक वर्ष बाद इस मासिक को परिषद् ने अपना मुख-पत्र मान्य किया और समय-समय पर इसके अलग-अलग प्रसंगों पर विशेषांक एवं अन्य ग्रंथ भी प्रकाशित हुए । इस मासिक का संचालन व सम्पादन विशेष रूप से श्री गोपालदासजी झालानी कर रहे थे किन्तु १९६८ में उनके गोलोकवासी हो जाने से पू. पा. श्री प्रथमेशजी महाराज श्री के मार्गदर्शन में इसके प्रकाशन का कार्य इन्दौर में ही श्री कुमनदास झालानी एवं श्री घनश्यामदासजी मुखिया देखते रहे ।

सन् १९७१ में बम्बई में परिषद् ने फोनिक्स प्रिन्टिंग प्रेस खरीद लिये जाने से इसका प्रकाशन वहाँ से आरम्भ हुआ और पू. पा. गो. श्री श्याममनोहरजी महाराज ने इसका दायित्व संभाला किन्तु आर्थिक कठिनाईयों एवं अन्य सहयोग के अभाव आदि अन्य कारणों से इसे भी कुछ वर्ष बाद ही बंद कर देना पड़ा । इसके अतिरिक्त कुछ वर्षों के लिए पू. पा. गो. श्री मथुरेश्वरजी महाराज के प्रयत्न से गुजराती में भी श्री वल्लभ विज्ञान का प्रकाशन हुआ । काफी घाटा होने से प्रेस १९७७ में बेच दिया गया था ।

अन्य विभिन्न प्रवृत्तियाँ :--

(१) परिषद् ने अपनी २५ वर्ष की अवधि में अनेक योजनाएं एवं प्रवृत्तियां अपनाई जो संक्षेप में इस प्रकार है । हिन्दु धर्मस्व आयोग में मेमोरन्डम प्रस्तुत किये तथा सम्प्रदाय की परम्पराओं को विद्यमान रखने का प्रयत्न किया ।

(२) गोवध विरोध आन्दोलन में भी महत्वपूर्ण योगदान किया व सक्रिय रूप में भी भाग लिया ।

(३) नाथद्वारा मंदिर अधिनियम के संबंध में सिद्धान्त विरोधी धाराओं को हटाने तथा संशोधन करके निरस्तीकरण के लिए भी काफी प्रयत्न हुए ।

(४) दैवी प्रकोप जैसे दुर्भिक्ष बाढ़ आदि के अवसरों पर सहायता संगृहीत की और राष्ट्रीय सहायता कोष में भी योगदान दिया ।

(५) संवत २०३५ में वल्लभ पंच शताब्दि महोत्वस सभी स्थानों पर व्यापक रूप से उत्साहपूर्वक मनाया गया ।

(६) आर्थिक सहयोग प्राप्त करने और वैष्णव समाज को परिषद् से जोड़ने हेतु १९६३ में गोलक योजना प्रारंभ की गई इसके अनुसार सम्प्रदाय से संबंधित विविध संस्थाओं और वैष्णवों के यहाँ गोलभ रखी जाने लगी । यह क्रम बहुत कुछ अंशों में कहीं-कहीं अभी भी चल रही है ।

(७) बम्बई से प्रकाशित इलस्ट्रेटेड विकली ने अपने १९७६ के एक अंक में गोस्वामी बालकों के संबंध में और सम्प्रदाय की परम्पराओं के संबंध में आक्षेपात्मक लेख प्रकाशित किया था जिसका विरोध किया गया और कलकत्ता के कार्यकर्ता श्री राधाकृष्णजी कोठारी मुकदमा चलाकर प्रकाशकों से माफी मंगवाने में सफल हुए ।

(८) देवनार में बूचड़खाना खोलने के अवसर पर जो विरोध हुआ उसमें भी परिषद् ने अपना योगदान दिया ।

समय-समय पर परिषद् द्वारा जो प्रस्ताव स्वीकृत हुए उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:--

सन् १९५७ - सम्प्रदाय की उन्नति के लिए हस्तलिखित ग्रंथों की सूची तैयार करनी और जो ग्रंथ अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हों उनको समुचित रूप से प्रकाशित करना ।

श्री वल्लभाचार्यजी के सिद्धान्तों के परिज्ञान तथा प्रचार के लिए महाविद्यालय की स्थापना और छात्रावास का संचालन ।

परिषद् की प्रगति के तथा अन्य उपयोगी समाचारों के प्रकाशन के लिये साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन ।

वर्तमान समय एवं परिवर्तित वातावरण को दृष्टिगत रखते हुए साम्प्रदायिक सिद्धान्तों के अनुसार वैष्णवों के लिये गृह सेवा प्रणाली तैयार करवाना ।

पूर्व परिषद् को जिसकी स्वर्ण जयंती हो रही है उसे इस परिषद् में मिलाना ।

गौपालन को महत्व देना और गोवध पर प्रतिबंध लगाने के लिए शासन से आग्रह करना ।

संप्रदाय के मंदिरों और बैठकों में सभा सम्मेलन करना और सम्प्रदाय के सिद्धान्तों की शिक्षा देना ।

एक व्यापक साम्प्रदायिक पुस्तकालय स्थापित करना जिसमें समस्त पुस्तकों का महान संग्रह हो ।

जिन-जिन गोस्वामी बालकों के अधिकार में महाप्रभुजी की बैठके हैं, उनकी स्वीकृति से और सहयोग से वहाँ समुचित सेवा की, सम्प्रदाय की प्रणाली के अनुसार, व्यवस्था करना।

सन् १९६३ - गोस्वामी आचार्य महानुभावों, विद्वानों तथा साम्प्रदायिक पत्रों से अनुरोध किया गया कि वे अपने प्रवचनों में भाषणों में तथा साहित्य सर्जन में वैष्णव जनता की सुषुप्त कर्तव्य भावना तथा सेवा भावना को जागृत करें और स्वमार्ग का सर्वागीण उत्कर्ष हो, वैसी नीति से काम करें ।

सन् १९६४ - साम्प्रदायिक हितों की सुरक्षा के लिए श्री वल्लभ वंशज गोस्वामी परिषद् तथा अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् दोनों के ध्येय प्रायः समान हैं फिर

भी उनको कार्यान्वित करने के लिए दोनों संस्थाओं का पारस्परिक समन्वय स्थापित हो जाय तो सम्प्रदाय की प्रवृत्तियों को कई गुना बल मिल सकता है । अतः गोस्वामी परिषद् से विनती की गई कि वह समानुभूतिपूर्वक विचार करके ऐसी व्यावहारिक कार्यप्रणाली का निर्माण करें जिससे दोनों संस्थाओं के सहयोग समन्वय से सद्उद्देश्यों की पूर्ति हो सके ।

इस हेतु चर्चा सभा गठित हुई थी उसकी रिपोर्ट के अनुसार परिषद् के उद्देश्य पूर्ति के लिए निम्नानुसार आठ लक्ष्य निर्धारित किये गये :--- (१) संगठन, (२) शिक्षा, (३) साहित्य सुरक्षा एवं प्रकाशन, (४) मंदिरों का संचालन, (५) सांस्कृतिक प्रवृत्तियां, (६) शोध अन्वेषण और इतिहास, (७) ऐतिहासिक स्थलों की सुरक्षा, (८) प्रचार । इन सब के लिये अलग-अलग गोस्वामी बालकों को दायित्व सौंपने का निर्णय लिया गया ।

प्रोफेसर नीलकंठ शास्त्री द्वारा लिखित "डेव्हलपमेन्ट आफ रिलीजन इन साउथ इंडिया" पुस्तक में पुष्टिमार्ग के संबंध में आक्षेपात्मक बातें प्रकाशित हुई, उसका विरोध किया गया ।

सन् १९६५ - राष्ट्रीय सहायता कोष ट्रस्ट की स्थापना करने का निर्णय लिया गया और वैष्णव जनता से इसमें सहयोग देने के लिए अपील की गई । इसका उद्देश्य किसी भी राष्ट्रीय कार्यों में सहायता देना रखा गया ।

सन् १९६६ - सम्प्रदाय में जो विभिन्न संस्थाएं विद्यमान है उनसे अनुरोध किया गया है कि वे परिषद् के साथ जुड़कर कार्य करें जिससे वैष्णव समाज लाभान्वित हो सकें।

नाथद्वारा प्रकरण का सुखद समाधान हो जाने पर तिलकायत श्री गोविन्दलालजी महाराज का अभिनंदन किया गया तथा राजस्थान शासन को धन्यवाद दिया गया तथा टेम्पल बोर्ड में परिषद् को समुचित प्रतिनिधित्व देने के लिए कहा गया ।

श्री लालबहादुर शास्त्री एवं श्री डा. एच. सी. भामा के निधन पर शोक प्रस्ताव किये गये ।

सन् १९६७ - सभी गोस्वामी बालकों से निवेदन किया गया कि ब्रह्म संबंध लेने वाले व्यक्तियों को परिषद् के सदस्य बनने को प्रेरित करें तथा उन्हें सम्प्रदाय के सिद्धान्तों संबंधी पुस्तिका भी देवें ।

सन् १९६८ - परिषद् द्वारा निर्धारित अष्ट-विध लक्ष्यों की पूर्ति के लिए श्रीकृष्णधाम योजना सेठ गोविन्ददासजी द्वारा प्रस्तुत की गई किन्तु उनकी निरन्तर रही अनुपस्थिति के कारण इस पर विस्तृत चर्चा नहीं हो सकी ।

आकाशवाणी से पुष्टि भक्ति संगीत एवं मार्ग से संबंधित अन्य गतिविधियों का प्रसारण परिषद् के माध्यम से हो इसके प्रयत्न के लिये परिषद् के अध्यक्ष एवं गोस्वामी श्री मथुरेश्वरजी अधिकृत किये गये ।

आचार्य परिषद् के गठन के संबंध में प्रारूप निश्चित करने हेतु पू. पा. गो. श्री

बृजभूषणलालजी महाराज, श्री रणछोड़ाचार्यजी महाराज, श्री मथुरेश्वरजी महोदय, श्री बृजरायजी महाराज एवं श्री मुरलीधरजी महाराज अधिकृत किये गये ।

मंदिरों के प्रबंध के संबंध में निर्णय लिया गया कि जो भी मंदिर परिषद् के पास व्यवस्था के लिए सुपुर्द किये जाय उनके लिए प्रबंध समिति का गठन करने का अधिकार गोस्वामी श्री रणछोड़ाचार्यजी महाराज को दिया गया ।

गोस्वामी बालकों के लिए आचार्य संहिता के विषय गोस्वामी श्री गोविन्दरायजी महाराज पोरबंदर वालों ने जो प्रस्ताव भेजा ता उस पर गोस्वामी बालकों एवं विद्वानों के सुझाव प्राप्त हुए है वे आचार्य परिषद् के पास भेज देने का निर्णय लिया गया ।

ब्रजपरिक्रमा वैष्णव समाज भक्ति भावना से करता है किन्तु यात्रा मुकाम अवरुद्ध होते जा रहे हैं । यात्रा मार्ग भी ठीक नहीं रहते हैं और यात्रियों को बहुत असुविधा होती है । अतः शासन से निवेदन किया गया कि मुकाम की भूमि का सीमांकन कर यात्रा के अतिरिक्त अन्य कार्य में उपयोग न किया जाय, इसके लिये आज्ञा प्रसारित करें ।

परिषद् का कार्यालय अध्यक्ष एवं मंत्री की सुविधा को ध्यान में रखते हुए अलग-अलग स्थानों पर जाने से असुविधा एवं अव्यवस्था होती रहने के कारण रजिस्टर्ड कार्यालय देहली में तथा कार्यकारी कार्यालय बम्बई में रखने का निर्णय हुआ । बम्बई में पू. पा. प्रथमेशजी की कृपा से लालमणी भवन में कार्यालय रखा गया ।

गाँठोली से जतिपुरा तक की प्रवेश सड़क एवं जतिपुरा की अंतरवर्तीय सड़कों को सुधराने के लिए और जतिपुरा में टेलीफोन तथा नियमित पुलिस चौकी की व्यवस्था के लिए शासन से अनुरोध किया गया ।

परिषद् को अंतर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् का रूप देने के लिये निर्णय लिया गया (२७-४-८०) और सदस्यों को प्रतीक चिन्ह देने का भी निर्णय लिया गया । साथ ही परिषद् का हीरकजयंती उत्सव मनाये जाने का निर्णय हुआ ।

सन् १९८१ - गोस्वामी श्री किशोरचन्द्रजी महाराज की प्रेरणा से गुजरात में कक्षा ११ में नर्मदनोजमानो लेख विश्वनाथ भट्ट द्वारा लिखा हुआ पढ़ाया जा रहा है उसमें गो. बालकों के संवंध में आक्षेप है उसका विरोध करने का निर्णय हुआ ।

आचार्य परिषद् के गान की जानकारी गो. श्री बृजाधीशजी महाराज ने दी इसके अध्यक्ष श्री गोविन्दरायजी महाराज पोरबंदर मनोनीत हुए ।

अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद्

परिषद् की कार्य व्यवस्था के लिये परिषद् समिति एवं कार्यकारिणी समिति का गठन प्रत्येक ३ वर्ष के पश्चात् होने का प्रावधान था । परिषद् समिति में परिषद् के साधारण सदस्यों के तथा आजीवन सदस्यों की संख्या के आधार पर शाखाओं को प्रतिनिधि भेजने का प्रावधान था और यह समिति कार्यकारिणी सदस्यों का गठन करती थी । इसका रजिस्टर्ड आफिस देहली में तथा कार्यकारी आफिस बंबई में रहा । संस्था सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत थी जिसका क्रमांक एस-१३६६ / १९५८-५६ था।

अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् के नाम से इस संस्था का कार्यकाल २५ वर्ष रहा । राजकोट में संस्था के हीरक जयंती महोत्सव के अवसर पर दिनांक २१-४-८१ को व्यापक अधिवेशन में परिषद् के नाम परिवर्तन का निर्णय लिया गया और इसे अंतर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् का नाम प्राप्त हुआ ।

परिषद् के २५ वर्ष के कार्यकाल में जिन गोस्वामी बालकों ने इसके अध्यक्ष पद को सुशोभित किया वे इस प्रकार हैं :--

(१) पु. पा. गोस्वामी श्री पुरुषोत्तमलालजी महाराज, कोटा १९५६-५६

(२) पु. पा. गोस्वामी श्री घनश्यामलालजी महाराज, कामवन १९५६-६३

(३) पु. पा. गोस्वामी श्री बृजरायजी महाराज, अहमदाबाद १९६३-६५

(४) पु. पा. गोस्वामी श्री बृजभूषणलालजी महाराज, जामनगर १९६५-७१

(५) पु. पा. गोस्वामी श्री गोविन्दरायजी महाराज, पोरबंदर १७१-७७

(६) पु. पा. गोस्वामी श्री ब्रजाधीशजी महाराज, बम्बई १९७७-८१

(परिषद् के अंतर्राष्ट्रीय नामांतरण तक)

इस अवधि में प्रधानमंत्री पद पर रहे महानुभाव :--

(१) प. भ. श्री प्रेमलालजी मेवचा, पोरबंदर १९५६-५६

(२) प. भ. श्री डॉ. गोवर्धनलालजी शुक्ल, अलीगढ़ १९५६-६१

(३) प. भ. श्री हरिकृष्णजी वीरजी शास्त्री १९६२-६४

(४) प. भ. श्री गोपालदासजी झालानी १९६४-६८

(५) प. भ. श्री नंददासजी वर्मा, जोधपुर १९७१-७५

(६) श्री कुमनदास झालानी, इन्दौर १९६८-७१ (व १९७५ से नाम परिवर्तन तक)

परिषद् की सम्पूर्ण अवधि में प्रथम पीठाधीश्वर पू. पा. गोस्वामी श्री रणछोड़ाचार्यजी महाराज ने प्रचाराध्यक्ष पद पर रहकर पूर्ण समर्पित भाव से परिषद् को व्यापक एवं सुदृढ़

बनाते हुए निरन्तरता प्रदान की । आप परिषद् को चिन्तन के साथ आर्थिक सहयोग भी देने में सदैव तत्पर रहे और असाधारण होकर भी एक साधारण कार्यकर्ता के समान हर कार्य में कार्यरत रहे ।

जिन गोस्वामी बालकों ने कार्यकारिणी में रहकर सक्रिय सहयोग प्रदान किया उनके नाम इस प्रकार हैं :--

पू. पा. गोस्वामी श्री घनश्यानलालजी महाराज, कामवन
पू. पा. गोस्वामी श्री पुरुषोत्तमलालजी महाराज, कोटा
पू. पा. गोस्वामी श्री गोविन्दरायजी महाराज, पोरबंदर
पू. पा. गोस्वामी श्री ब्रजभूषणलाल जी महाराज, जामनगर
पू. पा. गोस्वामी श्री माधवराय जी महाराज, पोरबंदर
पू. पा. गोस्वामी श्री ब्रजरायजी महाराज, अहमदाबाद
पू. पा. गोस्वामी श्री रणछोड़ाचार्यजी महाराज, कोटा - जतिपुरा
पू. पा. गोस्वामी श्री ब्रजरमणजी महाराज, मथुरा
पू. पा. गोस्वामी श्री दीक्षितजी महाराज, बम्बई
पू. पा. गोस्वामी श्री मुरलीधरजी महाराज, बम्बई
पू. पा. गोस्वामी श्री श्याममनोहरजी महाराज, बम्बई
पू. पा. गोस्वामी श्री रसिकरायजी महाराज, पोरबंदर
पू. पा. गोस्वामी श्री द्वारकेशरायजी महाराज, पोरबंदर
पू. पा. गोस्वामी श्री मथुरेश्वरजी महोदय, बड़ौदा
पू. पा. गोस्वामी श्री गिरधरलालजी महाराज, कामवन
पू. पा. गोस्वामी श्री इन्दिराबेटीजी महाराज, बड़ोदा

संगठन को मजबूत बनाओ, यही मेरी भेंट

मैं और सम्प्रदाय अलग-अलग नहीं हैं, संगठन को मजबूत बनाओ, यही मेरी भेंट है. जो भेंट मेरे जन्मदिन पर मुझे करते हो, वह सम्प्रदाय को दे दो, उससे संस्था को प्रभावशाली बनाओ, यही उचित है.

— प्रथमेश

अंतर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद्

परिषद् के इतिहास का तीसरा चरण २१-४-८१ को प्रारंभ हुआ । जब परिषद् का नाम परिवर्तन कर अंतर्राष्ट्रीय करने का निर्णय लिया गया । वैसे तो अखिल भारतीय पु. मा. वैष्णव परिषद् का नाम कुछ वर्ष तक चलता रहा क्योंकि वैधानिक एवं अन्य दृष्टि से दोनों का विलय होने में समय लगा किन्तु सभी कार्य अंतर्राष्ट्रीय पुष्टि मार्गीय वैष्णव परिषद् के नाम से सम्पादित होते रहे । अ. रा. पु. मा. वैष्णव परिषद् का रजिस्ट्रेशन सोसायटी एक्ट के अंतर्गत देहली में एस-१५६०६ / १९८५ दिनांक ५ अगस्त ८५ को हुआ । पंजीकृत कार्यालय का पता १०/६४, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई देहली है । तथा कार्यकारी कार्यालय बंबई में । प्रारंभ में पू. पा. प्रथमेशजी के निवास लालमणि भवन में रहा और वर्तमान में सात स्वरूप की हवेली भूलेश्वर में है । पत्र व्यवहार का पता सुविधा की दृष्टि से मनोहर ट्रेवल्स के पल्टन रोड़ स्थित कार्यालय में है ।

उक्त अधिवेशन के अवसर पर आचार्य बालकों की आचार्य परिषद् का भी गठन हुआ जिसके अध्यक्ष पू पा. गोस्वामी श्री गोविन्दरायजी महाराज पोरबंदर वाले मनोनीत हुए ।

इस नये परिवेश में पू. पा. प्रथमेजी महाराज के सुझाव पर परिषद् के अध्यक्ष पद पर विभिन्न कारणों से गोस्वामी आचार्यों के स्थान पर वैष्णवों को ही मनोनीत करने का निर्णय लिया गया और प. भ. श्री विट्ठलदासजी वल्लभदासजी कारानी बम्बई को इस पद का दायित्व सौंपा गया संक्षेप में परिषद् के प्रधान उद्देश्य वैष्णव समाज के सुदृढ़ एवं सक्रिय सगंठन के साथ के शुद्धद्वैत सिद्धान्तों के सन्दर्भ में भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति का प्रचार करना, मानव समाज के लिये हितकारी कार्य करना तथा पिछड़े वर्गों एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उत्थान हेतु प्रयत्न करना है ।

संस्था के सभी श्रेणी के वैष्णव सदस्य बनकर अपना योगदान प्रदान कर सके इस दृष्टि से विभिन्न श्रेणी की सदस्यता निर्धारित की गई है ।

अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये प्रचार, प्रकाशन एवं शिक्षण कार्य को महत्व दिया जा रहा हैं ।

कार्य संचालन के लिये जनरल कोंसिल, आचार्य परिषद्, मार्गदर्शक मंडल, केन्द्रीय कार्यसमिति एवं प्रांतीय समितियों का प्रावधान हैं ।

परिषद् की जनरल कौंसिल प्रत्येक तीन वर्ष के पश्चात् कार्यकारिणी समिति का गठन करती है । शुद्धाद्वैत के संबंध में मार्गदर्शन, आचार्य परिषद् से प्राप्त करने का प्रावधान हैं । जनरल कोंसिल, पुष्टिमार्गीय जगत की संसद का कार्य करती है ।

सन् १९८१से भी अभी तक जो प्रमुख कार्य परिषद् के माध्यम से हुए है उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :-

गोहत्या बंदी के संबंध में गोसेवा सम्मेलन वर्धा को सहयोग देने का निर्णय ।

पुष्टिमार्गीय मंदिरों एवम् बैठकों में जहां कहीं पब्लिक ट्रस्ट द्वारा अथवा शासन द्वारा नियुक्त बोर्डों द्वारा संचालन हो रहा है वहां पुष्टिमार्गीय प्रणाली के अनुरूप हो इस हेतु प्रयत्न किये जाय ।

पुरातत्व विभाग द्वारा सेव्य स्वरूपों के पंजीकरण हेतु फोटो मांगे जाते हैं । वह हमारी परंपराओं एवम् भावनाओं के विपरीत होने से स्वरूपों की छबि चित्रकार द्वारा अंकित मानी जावें ।

विदेशी तत्वों द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रलोभन अथवा दबाव से धर्मांतरण किये जा रहे है, उन पर रोक लगायी जावें । साहित्य प्रकाशन के लिये पूर्व निर्णय के अनुसार श्री वल्लभ प्रकाशन न्यास की स्थापना परिषद् के अंतर्गत की गई और इसके लिए २१००-रूपये न्यास निधि रूप में प्रदान किये गये । इस न्यास का रजिस्ट्रेशन भी हो चुका है तथा इसमें परिषद के प्रतिनिधि के रूप में श्री ब्रजमोहनदासजी विजयवर्गीय शुजालपुर वाले मनोनीत किये गये । परिषद् के प्रचार कार्य हेतु भक्तिवर्धिनी वाहन १७-४-८३ को कार्यरत हुई और अनेक वर्षों तक कार्य करती रही किन्तु तदपश्चात् उसका रख-रखाव अधिक खर्चीला हो जाने से वह बेच दी गई । अब गुजरात राज्य की भक्तिवर्धिनी कार्यरत है ।

गुजरात राज्य की कक्षा ११वीं की पाठ्यपुस्तक में नर्मदनोजमानो नाम का पाठ संप्रदाय के संबंध में आपत्तिजनक लेख होने से पूर्व निर्णय के अनुसार उसका विरोध किया गया और चिमनभाई सेठ एवं गुजरात प्रांत के अनन्य कार्यकर्ताओं द्वारा विरोध करने पर उस पाठ को सरकार द्वारा पाठ्यक्रम से निकाल दिया गया ।

विभिन्न प्रांतों में प्रांतीय समितियों का गठन किया गया जिसमें वह शाखाओं एवं वैष्णव समाज से संपर्क करने में अधिक सक्षम हो सकें । वर्तमान में महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश,गुजरात, राजस्थान, उत्तरप्रदेश एवं गोवा में प्रांतीय समितियां है ।

गुजरात प्रांत समिति ने बाढ़ पीड़ित तथा सूखा क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया और काफी द्रव्य तथा अन्य जीवन-उपयोगी सामग्री का वितरण किया । पूर्व निर्धारित परंपराओं के अनुसार सिहस्थ कुंभ पर्वों पर वल्लभाचार्य नगर की स्थापना की गई तथा विभिन्न कार्यक्रमों की व्यवस्था की गई ।

धर्म संस्कार शिविर स्थान-स्थान पर रखने और वैष्णव परिवारों के बालकों में धार्मिक संस्कार डालने का कार्य भी आरंभ हुआ । श्री द्वारकाप्रसादजी पाटोदिया, श्री डा.गजानंनजी शर्मा आदि इन आयोजनों में विशेष रूचि लेकर बालकों को शिक्षा देते रहे है । अब तक २० शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हो चुके हैं । श्री यमुनाजी के जल शुद्धि कार्य हेतु.

उत्तरप्रदेश शासन के प्रयत्नों के लिये उसकी सराहना की गई ।

समय समय पर विभिन्न पर्वों एवम् आयोजनों तथा वार्षिक बृज यात्राओं के अवसर पर परिषद् के प्रचार संमेलन किये जाते है ।

परिषद् के तत्वाधान में श्री वल्लभ सुधा (गुजराती मासिक) का प्रकाशन राजकोट से हो रहा है । श्री वल्लभ संदेश (गुजराती) श्री वल्लभ स्वर (हिन्दी) पाक्षिक भी प्रकाशित होते रहे है । वल्लभ संदेश बंबई से एवम् वल्लभ स्वर भोपाल से निकलते है ।

आदिवासी क्षेत्र में पू.पा. प्रथमेशजी की प्रेरणा से झाबुआ प्रकल्प के अंतर्गत ग्रामीण एवम् अरण्य सेवा संस्था द्वारा श्री वल्लभ बाल विद्या निकेतन की स्थापना झाबुआ में १९८२ में की गई । इसका संचालन आदरणीय श्री सीतारामदासदी बैरागी निस्वार्थ भाव से बड़े मनोयोग से कर रहे हैं । वर्तमान में इसमें के.जी.पहली से कक्षा ५तक की शिक्षा दी जा रही है तथा परीक्षाफल बहुत ही अच्छा रहता आया है । आदिवासी बालकों को निशुल्क शिक्षा दी जाती है । शाला भवन निजी बना लिया गया है ।

पू. पा. प्रथमेशजी की प्रेरणा से ही राजकोट में ऋषिकुल योजना कार्यान्वित की जा रही है । इसमें आचार्य बालक्रों एवम् वैष्णव समाज के बालकों को शिक्षा प्रदान की योजना है ।

मध्यप्रदेश शासन द्वारा गोवध पर बंदिश लगा देने पर परिषद् की ओर से धन्यवाद दिया गया ।

संरक्षक एवं आजीवन संरक्षकों को प्रतीक चिन्ह एवम् प्रमाण पत्र दिया जाने का निर्णय लिया गया तथा वर्ष में एक बार व्रतोत्सव टिप्पणी तथा ग्रंथ आदि भेजने का भी निर्णय लिया गया ।

घर-घर में 'जयश्रीकृष्ण' का प्रचार करने के लिये जयश्रीकृष्ण के भित्ति पत्रक घरों में पहुंचाये जा रहे हैं ।

"श्री कृष्णाश्रय स्तोत्र" का भी जन-जन में प्रचार किया गया है । वैष्णवों में जाग्रति लाने के लिये द्वि दिवसीय वैष्णव-शिविरों का आयोजन किया जाता है । पंडित द्वारकाप्रसाद पाटोदिया, किशनगढ़, अब तक ऐसे तीन शिविरों का - भोपाल, पोलायकलाँ तथा मोहन-बड़ौदिया में आयोजन कर चुके हैं ।

भोंरा (जिला गुना म. प्र.) में श्रम-शिविर लगाकर तथा पू. पा. नि. ली. प्रथमेशजी महाराज की श्रम-सेवा से शुभारंभ कर श्री वल्लभाश्रय की स्थापना की गई । जन-जन में "पुष्टिमार्ग" का संदेश पहुंचाने के लिये "श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य तथा पुष्टिमार्ग" (लेखक डॉ. गजानन शर्मा) आदि लघु प्रचार पुस्तिकाओं का हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती में प्रकाशन हो चुका है ।

कीर्तन शिविर तथा कीर्तन कक्षाएं लगाई जाती है । गुजरात में सत्संग - स्वाध्याय

की प्रवत्तियाँ तलती हैं । सूरदासजी के दीक्षा गुरु श्री वल्लभाचार्यजी के साथ उनका चित्र प्रकाशित कर उसका प्रचार किया जा रहा है ।

अंतर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् में जिन महानुभावों ने अध्यक्ष पद सुशोभित किया तथा परिषद् को गति देने में सहयोग प्रदान किया वे इस प्रकार है :-

(१) प. भ,श्री विट्ठलदासजी वल्लभदासजी कारानी, बंबई । .

(२) प. भ.श्री हरिदासजी देवीदासजी माधवजी ठाकरसी (शेठ मनुभाई) बंबई ।

(३) प.भ. श्री नटवरलालजी हरगोविंदासजी शाह बंबई ।

कार्यकारी अध्यक्ष श्री डा. गजाननजी शर्मा

प्रधानमंत्री - कुमनदास झालानी, इंदौर

पू. पा. प्रथमेशजी बिना किसी पद पर रहते हुए भी परिषद को अपना अपूर्व सहयोग देते हुए कार्यकर्ताओं को प्रेरणा प्रदान करते रहे और अपना स्वास्थ्य ठीक नहीं रहने पर भी परिषद् के प्रत्येक कार्यक्रम में सहर्ष सम्मिलित हुए । किन्तु आपश्री के अचानक लीला प्रवेश हो जाने से परिषद् की एक बहुत बड़ी क्षति हुई ।

सम्प्रदाय की वर्तमान स्थिति, आपसी राग द्वेष एवं सम्प्रदाय के तथा संगठन के प्रति उदासीनता, क्षेत्रीय, प्रांतीय भावनाओं का प्रभाव, परस्परिक कलह आदि देखकर आप श्री सदैव चिंतित रहते थे और जो उद्‌गार समय-समय पर व्यक्त करते थे उनमें से कुछ निम्नानुसार है ।

★ धर्म आज व्यवस्था चाहता है और यह संस्था के द्वारा संभव है । संस्था त्याग एवं उत्सर्ग चाहती है ।

★ मेरा तो स्वधर्म है वही संस्था भी है । मैं इसे एवं धर्म को दो नहीं समझता ।

★ यह पुष्टिमार्ग क्या है ? समाज को धारण तथा पोषण करने वाला प्रशस्त पथ और उस पर चलने का सिद्धान्त है शुद्धअद्वैत । हमें शुद्ध एकता का स्थापन करना है । समाज को एक रूप में धारण तथा पोषण करने वाले सबल मार्ग को ही पुष्टि मार्ग के नाम से सम्बोधित किया गया है।

★ हमें वर्तमान अवस्था से उन्नति कर सुख शांतिमय स्थिति तक पहुंचना है । समाज की कुत्सितता को मिटाकर शुद्ध एकता स्थापित करनी है ।

★ आज प्रपंच ही प्रधान रह गया है, ऐसी दयनीय स्थिति है यह जीवन की । भक्ति का प्रभाव दिखाई नहीं दे रहा है और न प्रभु पर पूरा भरोसा है । केवल लौकिक आसक्ति ही प्रधान हो गई है । क्या कभी भी वैष्णवजन वास्तविकता को नहीं समझेंगे और ऐसा ही विखराव रहेगा क्या ? स्वधर्म विमुखता की कोई सीमा नहीं है । लगता है किसी भी उपदेश का अन्तरस्थल में स्पर्श नहीं हैं ।

वै. प. का निवेदन

उक्त सब बातों को ध्यान में रखकर यह आवश्यक है कि सम्पूर्ण वैष्णव समाज संगठित होकर रहे । इसी से वे अपना अस्तित्व बनाये रख सकेंगे । परिषद् की सुरक्षा, निरन्तरता, गतिशीलता बनाये रखना सबका अनिवार्य कर्तव्य है । शुद्ध मन से और शुद्ध आत्मा से क्षेत्रीय, प्रांतीय या अन्य विवादास्पद भावनाओं से बचकर एवं संकीर्णता त्याग कर और व्यापकता का ध्यान रखकर सम्प्रदाय एवं संगठन के प्रति पूर्ण निष्ठा से कार्य करने से ही हम अपने उद्देश्यों में सफल हो सकेंगे । और इसी से हम पू. पा. प्रथमेशजी के प्रति अपनी श्रद्धा सही रूप में व्यक्त कर सकेंगे ।

राजस्थान राज्य में परिषद् की गतिविधियाँ वर्ष ८६ से ८६ तक

१. **प्रकाशन --** राज्य समिति ने प्रचार प्रसार हेतु निम्न प्रकाशन निकाले ।

१. वल्लभाचार्य का दिव्य संदेश
२. त्रिविध लीला नामावली
३. जय श्री कृष्ण - श्री कृष्ण शरणं मम का प्रकाशन
४. परिषद् क्यों ?
५. परिषद् गतिविधियाँ
६. श्रीकृष्ण पुस्तक प्रकाशन
७. नूतन वर्षाभिनंदन का प्रतिवर्ष प्रकाशन के साथ में वल्लभ सम्प्रदाय के व्रत एवं उत्सव का भी प्रकाशन ।
८. जयपुर शाखा द्वारा स्मारिका का प्रकाशन
    i. कृष्ण एवं गर्तिमम
    ii. पुष्टि सृष्टि
९. छप्पन भोग स्मारिका का प्रकाशन
१०. मालपानी पुष्टि मार्गीय ट्रस्ट जयपुर द्वारा अष्ट छाप कीर्तन की सुंदर पुस्तक का प्रकाशन ।

२. प्रचार प्रसार हेतु नाथद्वारा में श्री डोगंरे जी की भागवत् के समय व कुंभ मेला प्रयाग में साहित्य बाँटे ।

३. परिषद् के उपाध्यक्ष व राजस्थान की शिक्षा राज्य मंत्री डा. गिरजा व्यास के प्रयास से सुखाड़िया विश्वविद्यालय दर्शन विभाग द्वारा वल्लभ पीठ की स्थापना की गई।

४. टी. डी. सी. प्रथम वर्ष राजस्थान की पाठ्यपुस्तक में अनाचार शब्द का विरोध किया गया ।

५. स्वामी अग्निवेष द्वारा नाथद्वारा में हरिजन प्रवेश का जो नाटक किया गया उसका विरोध किया गया ।

६. महाप्रभु वल्लभाचार्य का नाम भारत सरकार की पर्व एवं जयंती सूची में लिखने हेतु सूचना एवं प्रसारण मंत्री भारत सराकर से अनुरोध किया गया ताकि दूरदर्शन व आकाशवाणी से प्रचार हो सके ।

संस्कार शिविर

१. कोटा में २० मई, ८७ को धर्म संस्कार शिविर का आयोजन रखा गया, करीब १०० छात्रों ने भाग लिया ।

२. भवानीमंडी में ५ जून, ९८ को धर्म संस्कार शिविर का आयोजन हुआ ।

दोनों आयोजन डॉ. गजानन जी शर्मा - श्री द्वारका प्रसादजी पाटोदिया, श्री विनोदजी दीक्षित के सहयोग, मार्गदर्शन से सफल रहे ।

साहित्य बिक्री :--

१. कोटा शाखा द्वारा परिषद् साहित्य व वल्लभ साहित्य -- पुष्टिमार्गीय ग्रंथ आदि मंगवाकर विक्रय हेतु रखे जाते हैं, वर्तमान में करीब ५०००/- मूल्य की वार्षिक साहित्य बिक्री होती है ।

२. कोटा में पुष्टि मार्गीय साहित्य प्रकाशन समिति की स्थापना हुई इसके द्वारा अब तक ३ ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है जिनकी सर्वत्र काफी मांग है । इस कार्य में श्री जमनादासजी मोहता का कार्य काफी प्रशंसनीय रहा ।

बून्दी में शाखा :--

पूज्यपाद श्री प्रथमेश जी महाराज का २ दिन बूंदी में प्रवास रहा । नई शाखा खुली, प्रवचन हुये जिससे वेष्णवों में विशेष जागृति आई ।

समितियों में प्रतिनिधित्व

देव स्थान विभाग ने सलाहकार समितियाँ बनाई हैं परिषद् ने उनमें परिषद् को प्रतिनिधित्व देने हेतु लिखा है ।

सहयोग :--

कोटा में श्री मथुराधीश मंदिर के सहयोग से प्रवचन एवं सत्संग भवन का निर्माण किया गया है ।

शीतल जल प्याऊ का भी छप्पन भोग स्थल में निर्माण हुआ है । जिसका संचालन परिषद् की कोटा शाखा द्वारा हो रहा है ।

पर्व उत्सव :--

कोटा में महाप्रभु वल्लभाचार्य की जयंती पर नगर में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई । प्रतिवर्ष प्रातः नगर भ्रमण व सांय सभा आदि प्रत्येक पर्व पर होती है ।

जयपुर में रविन्द्र मंच पर कार्यक्रम रखे गये जिनके प्रमुख महानुभावों ने भाग लिया। वीकानेर में कृष्ण जन्मोत्सव पर अनेक कार्यक्रम हुए । मनोहर थाना खानपुर - छबड़ा - उदयपुर आदि अनेक स्थानों पर वल्लभ जयंती मनाई गई ।

आजीवन सदस्यता --

वर्तमान में करीवन ६२ आजीवन सदस्य हैं ।

अन्तर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद्, मध्यप्रदेश राज्य समिति

मालव क्षेत्र में श्री प्रथमेश स्मृति

इस क्षेत्र में जिन को श्री प्रथमेश के दर्शन करने एवं वचनामृत सुनने का अवसर प्राप्त हुआ या कार्यक्रमों में भाग लेने का या संग रहने का अवसर मिला वे सभी उनकी समृति प्रतिपल नत मस्तक होकर करते हैं एवं उनके द्वारा जगाई हुई ज्योति को अक्षण्ण बनाये रखने का संकल्प करते हैं । इस क्षेत्र की समस्त वैष्णव जनता आपश्री की कृतज्ञ है कि आपकी महती कृपा इस क्षेत्र पर सदैव बनी रही ।

लगभग ४० वर्ष हो गये जब गिरीराज (जतीपुरा) में आपश्री के प्रथम दर्शन श्री मथुरेश जी के मंदिर में हुए । आपश्री ने आज्ञा करी की चन्द्र सरोवर मेरे साथ चलना है, वहाँ कार्यक्रमों के दौरान मध्यप्रदेश में अ. पु. वैष्णव परिषद् की गतिविधियों में भाग लेने की आज्ञा की । जब आप इन्दौर पधारे तब श्री गोपालदासजी झालानी के मार्गदर्शन में कार्य करने की आज्ञा की । आपने इस क्षेत्र के लिये पर्याप्त समय दिया और सम्पूर्ण क्षेत्र में विस्तृत यात्रायें की । सर्वप्रथम उज्ञैन, शाजापुर, पोलाय, तलेन, बोड़ा, खुजनेर, छापीहेड़ा, जीरापुर, खिलचीपुर, राजगढ़, ब्यावरा, नरसिंहगढ़, भोपाल, इटारसी, पीपरिया, सीहोर, इछावर, सारंगपुर, मोहन बड़ोदिया, आगर, आदि स्थानों पर आपश्री ने स्वयं पधाकर वैष्णवता का एवं संगठन का प्रचार कार्य किया । सभी स्थानों पर अ. पु. वैष्णव परिषद् की शाखायें प्रारम्भ की । वैष्णव सभाओं, भागवत् एवं षोढ़श ग्रंथों के माध्यम से वचनामृत दिये । दूर-दूर के क्षेत्रों में जैसे - भोंरा, गुना, मनोहर थाना, धरोनिया, सोयत, आदि स्थानों पर भी आप पधारे और संगठन का प्रचार-प्रसार कार्य सम्पादित किया ।

पूज्य प्रथमेशजी की आज्ञानुसार एवं आपश्री के मार्ग निर्देशन में इस मालव अंचल में जो महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित किये गये उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :--

(१) श्री गुंसाईजी का उत्सव :-- मोहन बड़ौदिया :--

दिनांक ५ व ६ जनवरी १९८६ को मोहन बड़ोदिया में श्री गुसाई जी की बैठक पर एक विशाल एवं भव्य उत्सव श्री गुसाईजी के ४७६ में प्रागट्य उत्सव पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया । इस उत्सव में पूरे देश से लगभग १५,००० वैष्णवों ने भाग लिया। विदेश तक से वैष्णव जन पधारे । इतना सुन्दर सुव्यवस्थित एवं भव्य समारोह इस क्षेत्र में प्रथम बार ही आयोजित हुआ । आपश्री के मार्ग निर्देशन एवं आशीर्वाद से यह पूरा आयोजन अत्यंत सफल रहा ।

(२) हरिजन उद्धार शिविर :--

अधिकांशजनों में यह प्रवाद है कि पुष्टिमार्गीय में छुआछूत बहुत अधिक है एवं हरिजनों के लिए कोई स्थान नहीं है । आपश्री ने इस प्रवाद को गलत सिद्ध करने के लिए आगर में हरिजन संस्कार शिविर आयोजित किया । इस शिविर में ४० हरिजन बालकों

को आपश्री ने कंठी प्रदान कर नाम सम्बन्ध स्थापित किया । एक सप्ताह में उनमें सुसंस्कार स्थापित किए । आज वे बालक परम वैष्णव जीवन जी रहे हैं और दूसरे संवर्गों के लिए आदर्श उपस्थित कर रहे हैं । उस काल में क्रांतिकारी कदम उठाना आपश्री की कल्पनाशीलता एवं साहस का परिचायक है ।

(३) वल्लभाचार्य नगर की स्थापना :--

सिंहस्थ में पुष्टिमार्गीय वैष्णव सम्प्रदाय की कोई अलग से पहचान सुस्थापित नहीं थी । पंच अखाड़ा वैष्णवों के साथ ही हमारे आचार्यगण सिंहस्थ स्नान करते थे । श्री प्रथमेश जी महाराज ने पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय के लिए अलग से श्री वल्लभाचार्य नगर स्थापित करने की परम्परा प्रारंभ की । सर्व प्रथम सन् १९५६ के सिंहस्थ में प्रारम्भ यह परम्परा सन् १९९२ के सिंहस्थ तक अक्षुण्ण है । श्रीमद् वल्लभाचार्य के समय के प्रमाण देकर सिंहस्थ के शाही स्नान में पुष्टिमार्गीय आचार्यगण विष्णु स्वामी अखाड़े के साथ सबसे आगे रहकर सर्वप्रथम स्नान करेंगे । ऐसी परम्परा कायम की ।

(४) वल्लभाश्रय सदन, भोंरा :--

आपश्री का सबसे महत्वपूर्ण आशीर्वाद ग्राम भोंरा जिला गुना में श्री वल्लभाश्रय सदन की स्थापना के रूप में हमें मिला है । यह एक तीर्थस्थान के रूप में आपश्री के द्वारा स्थापित किया गया है । वहाँ पर श्रीमद् वल्लभाचार्य का स्वरूप स्थापित कर आपने उस क्षेत्र में वैष्णवता का सुदृढ़ीकरण किया । वह स्थान श्री श्रीयमुनाजी सदृश्य निरंतर प्रवाह मान सरिता के किनारे इतना सुन्दर एवं आकर्षक बना है कि वहाँ पर दूर-दूर के वैष्णव दर्शन करने आने लगे हैं । आपश्री की इच्छा थी कि यह स्थान एक सामाजिक एवं सामुदायिक केन्द्र के रूप में विकसित हो जहां वैष्णवता का शिक्षा केन्द्र चिकित्सालय एवं अन्य गतिविधियाँ संचालित होती रहे । हम इस दिशा में सादर प्रयत्नशील हैं ।

(५) धर्म संस्कार शिविर :--

सिंहस्थ पर्व में श्री वल्लभाचार्य नगर में पधारे वैष्णवों के लिये विविध कार्यक्रमों के संयोजन के तारतम्य में ही वहाँ एकत्रित बालकों एवं किशोरों के लिये आप श्री ने एक अभिनव कार्यक्रम प्रारम्भ किया । वह कार्यक्रम था धर्म संस्कारशिविर । इसमें पाँच दिनों तक वैषणव बालकों को संस्कारवान एवं विद्वान मनीषियों के सानिध्य में रखकर उनमें सुसंस्कार स्थापित करना एवं पुष्टिमार्ग के सम्बन्ध में सभी आवश्यक जानकारियां संक्षेप में देना इसका मुख्य उद्देश्य था । शिविर का यह कार्यक्रम इतना लोकप्रिय हुआ कि पूरे भारत वर्ष में आज तक ये शिविर निरंतर आयोजित किये जा रहे हैं । और इनमें हज़ारों वालक वालिकाओं के पुष्टिमार्ग में लाने का प्रयत्न किया जा रहा है ।

(६) संगठन का सुदृढ़ीकरण :--

आपश्री का सबसे वड़ा योगदान वैष्णव परिषद् के संगठन को गति प्रदान करना

एवं सुदृढ़ बनाना रहा। मालवा क्षेत्र में आपश्री ने छोटे-छोटे ग्रामों तक में यात्रा करके परिषद् की अनेक शाखायें स्थापित की और वैष्णवों को संगठन का महत्व बताया । मालव क्षेत्र की अधिकांश शाखायें आपश्री के मार्ग निर्देशन में ही स्थापित की गईं । अपने प्रवास में आपश्री सदैव परिषद् की शाखा एवं संगठन की जानकारी लेते थे एवं जहाँ शिथिलता दृष्टिगोचर होती थी वहाँ जागृति उत्पन्न कर देते थे । आज मालवा क्षेत्र में अ. पु. वैष्णव परिषद् का जो संगठनात्मक ढांचा खड़ा है, वह आपश्री के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन का ही परिणाम है ।

(७) ग्रामीण एवं अरण्य संस्थान, झाबुआ :--

मध्यप्रदेश राज्यसमिति आपश्री के चरणों में सादर विनम्र श्रद्धांजली अर्पित करती है।

दीनदयाल दुबे	मनुभाई शर्मा	बृजमोहनदास विजयवर्गीय
कार्यालय सचिव	सचिव	अध्यक्ष

आपश्री का सबसे महत्वपूर्ण एवं स्थाई प्रकृति का कार्य ग्रामीण एवं अरण्य संस्थान झाबुआ की स्थापना है । यह संस्थान मुख्य रूप से भील एवं आदिवासी बालकों को शिक्षित करना एवं उनमें पुष्टिमार्गीय संस्कारों को डालने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है । झाबुआ में यह संस्थान संत श्री सीतारामदासजी बैरागी के कुशल नेतृत्व में कार्य कर रहा है । इसमें अभी कक्षा ५ तक के बालक बालिकायें शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं । इसके अलावा वस्त्र वितरण ओषधि वितरण आदि का कार्य भी किया जा रहा है ।
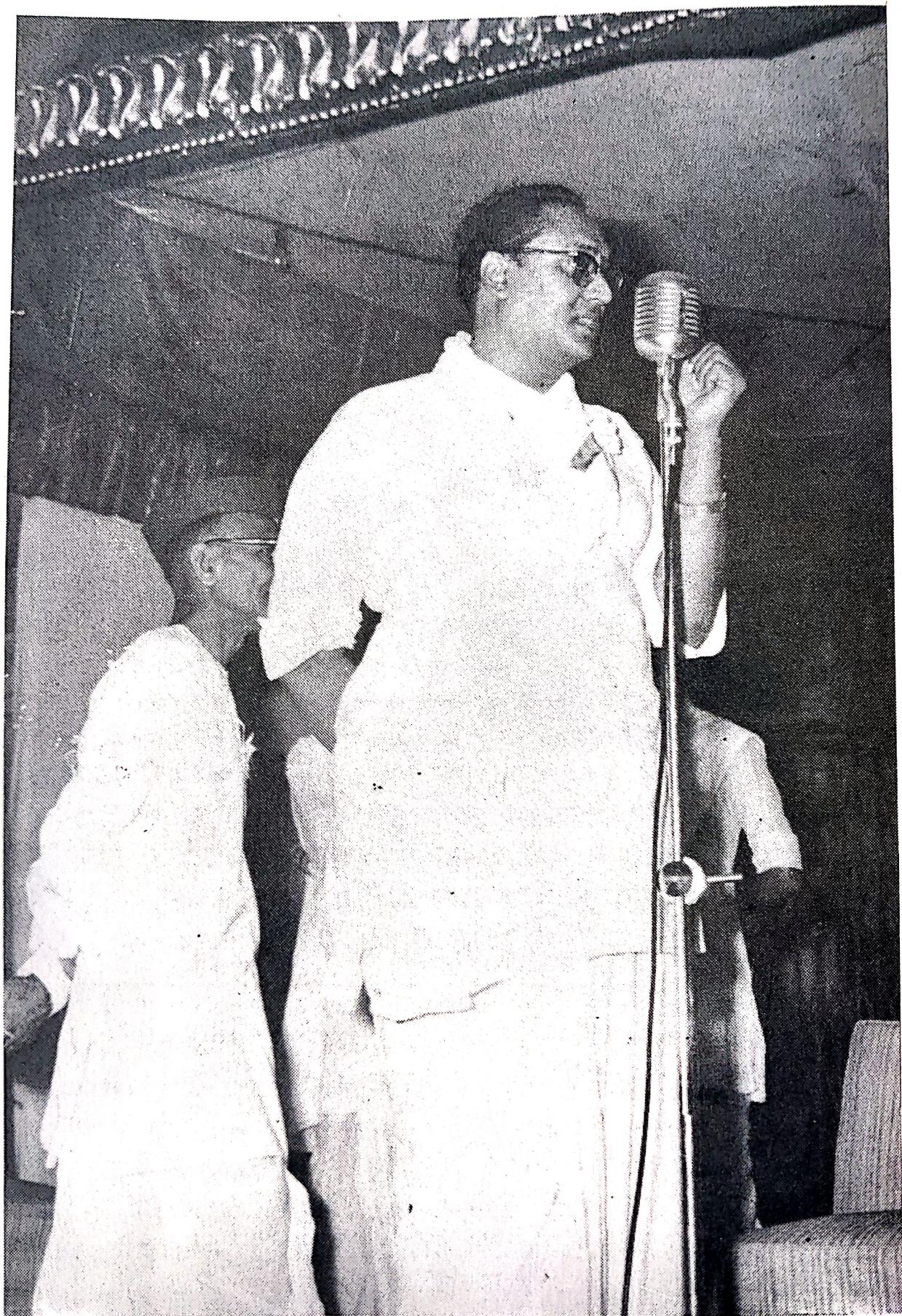
संगठन-मंत्र के उद्घोषक श्री प्रथमेश

अंतर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद्-गुजरात राज्य

विविध कार्य

(१) विविध उत्सवों का आयोजन :- श्री महाप्रभुजी, श्री गुसाँईजी, श्री गोकुलनाथजी, श्री हरिरायजी, श्री यदुनाथजी के उत्सव।

(२) धर्म संस्कार शिबिर :- बोडेली, गोधरा, राजपीपला

(३) फॉलोअप शिबिर :- गांगरडी, आणंद केन्द्र, हालोल

(४) कीर्तन शिबिर :- गोधरा, हिमंतनगर, उमरेठ महेमदाबाद, दाहोद, खंभात

(५) सेवा-शिबिर :- बड़ौदा, इन्द्रपुरी शाखा

(६) श्री वल्लभाश्रय परिषद् भवन - घोराजी, थानगढ़

(७) श्री वल्लभ बालमंदिर - पाठशाला - बीलखा, केवडिया कॉलोनी (प्रयत्न जारी हैं।)

(८) ऋषिकुल - राजकोट (कार्यवाही हो रही है)

(९) सोमयज्ञ के आयोजन में सहयोग - पू. गो. प्रथमेशजी प्रेरित - राजकोट, कर्णावती (अहमदाबाद), सूरत । पू. गो. वल्लभरायजी प्रेरित, कारीरी यज्ञ-राजकोट

(१०) जिला सम्मेलन - सूरत, पाटण, आणंद, तारापुर, महेमदाबाद, गोधरा, दाहोद, हालोल, जामनगर, अहमदाबाद (कर्णावती), राजकोट, सुरेन्द्रनगर, बढ़वाण शहर, संखेड़ा, बोडेली, डभोई, बड़ौदा, सावली

(११) श्रीमद् भागवत् ज्ञान यज्ञ आयोजन - व्यासपीठ पर, पू. श्री योगेश भाई शास्त्री के द्वारा बोडेली, कर्णावती, उकाई, दाहोद, हालोल, भरुच, राजपीपला, वायुयान अकस्मात श्रद्धांजलि हेतु कर्णावती (अहमदाबाद) में । पू. श्री प्रद्युम्न भाई शास्त्री के द्वारा धुवारण, गोधरा, डाकोर, (षोडश-ग्रंथ ज्ञान यज्ञ) - जेतपुर, तेजगढ़

(१२) वार्ता सप्ताह - श्री रमेशभाई परीख - दाहोद । श्री जगदीश भाई शास्त्री - दाहोद, गांगरडी, बोडेली, हालोल, कालोल और इंद्रपुरी (बडौदा) ।

(१३) पंचसूत्री कार्यक्रम शाखाओं को दिया गया जिससे सत्संग-स्वाध्यय, गौशाला, पाठशाला, वाचनालय और उत्सव आयोजन करना शामिल था । हालोल, दाहोद, राजकोट, कालोल, डेरोल स्टेशन, जेतपुर, बड़ौदा, राजपीपला, जामनगर और तेजगढ़ में यह आयोजन पूर्ण किया है ।

हालोल, गोधरा, साणंद, जुनागढ़, जामनगर में उपवन का निर्माण हो गया है ।

(१४) साहित्य प्रकाशन - सोमयज्ञ - कर्णावती के अवसर पर श्री वल्लभाचार्यजी, श्री गुसाँईजी, श्री गोकुलनाथजी, पुष्टिमार्ग के सिद्धान्त और परिषद-परिचय पाँच पुस्तिकाओं का एक संपुट ५००० प्रत-प्रकाशित किया गया । पुष्टि प्रसाद - पू. गो. श्री व्रजेशकुमार (बडौदा)

का आशीर्वचन, पू. गो. श्री इंदिरा बेटीजी के वचनामृत और परिषद-अहवाल प्रत ५००० प्रकाशित । अष्टाक्षर महत्व - प्रत ७५०० । नित्य दर्शन, नित्य स्मरण प्रत ८००० । नित्य दर्शन-नित्य स्मरण-नित्य चिंतन प्रत ३०००० । परिषद-स्मरणिका प्रत २००० । वेणुमधुर- श्री योगेशभाई शास्त्री । पुष्टि रस बिन्दु - श्री योगेशभाई शास्त्री । श्री वल्लभ स्मृति अंक प्रत ४००० । पांच चित्रों का संपुट - प्रत १००० । सामायिक- श्री वल्लभसुधा - राजकोट और श्री वल्लभ संदेश - मुंबई से प्रकाशित होते हैं । पुष्टि-प्रकाशन के लिए 'पुष्टि-प्रसार' नामक एक स्वतंत्र प्रकोष्ट अहमदाबाद में प्रारम्भ हो गया है ।

(१५) पू. गो. आचार्यवृंद का प्रवास एवं वचनामृत - नि. ली. पू. गो. श्री प्रथमेशजी महाराज (कोटा-जतीपुरा), पू. गो. श्री व्रजेशकुमारजी महाराज (कांकरोली-बड़ौदा), पू. गो. श्री व्रजभूषणलालजी महाराज (जामनगर), पू. गो. श्री इंदिरा बेटीजी महोदया (बडौदा), पू. गो. श्री वागीश बाबाजी (बडौदा-कांकरोली), पू. गो. श्री द्वारकेशलालजी महोदय (बडौदा), पू. गो. श्री किशोरचन्द्रजी महाराज (जुनागढ़), पू. गो. श्री नटवर गोपालजी महाराज (कर्णावती), पू. गो. श्री वल्लभरायजी महाराज (सुरत), पू. गो. श्री कल्याणरायजी महाराज (पूणें), पू. गो. श्री हरिरायजी महाराज (जामनगर), पू. गो. श्री वल्लभरायजी महोदय (राजकोट), पू. गो. श्री व्रजेशरायजी महाराज (कड़ी-कोटा), पू. गो. श्री व्रजेशकुमारजी महोदय (राजकोट), पू. गो. श्री धूमिल बाबाश्री (बडौदा-सुरत), पू. गो. श्री मथुरेश्वरजी महाराज (बडौदा), पू. गो. श्री राजेश बाबाश्री (कडी-कोटा), पू. गो. श्री यदुबाबाश्री (धीरमग्राम), पू. गो. श्री द्वारकेश बाबाश्री (अमरेली), पू. गो. श्री वल्लभ बाबाश्री (कड़ी-कोटा), पू. गो. श्री कनु बाबाश्री (वीरमग्राम), पू. गो. श्री योगेश बाबाश्री (बडौदा-सूरत) ।

(१६) पू. शास्त्रीजी के प्रवास-प्रवचन और प्रश्नोत्तरी - पू. श्री के. का. शास्त्रीजी (कर्णावती). पू. श्री योगेश भाई शास्त्रीजी (कर्णावती), पू. श्री प्रद्युम्न भाई शास्त्रीजी (बड़ौदा), पू. श्री नवनीत प्रिय जी शास्त्रीजी (नड़ियाद), पू. श्री मधुसुदन भाई शास्त्रीजी (सुरत), पू. श्री जगदीश भाई शास्त्रीजी (खंभात) ।

(१७) विद्वानों के प्रवचन-सत्संग - श्री रमेशभाई परीख (महेसाणा), श्री भगवत प्रसाद पंडया (बड़ौदा), डॉ. कृष्णजीवन गांधी (गोधरा), श्री कंचनभाई दरू (डभोई), श्री विठ्ठलदास शाह (छोटा उदेपुर) ।

(१८) संगठन हेतु प्रवास-प्रवचन - श्री रसिकभाई कापड़िया (मोडासा), श्री चीमनभाई अेम. शेठ (बड़ौदा), श्री सूर्यकांत भाई के. शाह (बोरीयाबी), आचार्य श्री वी. पी. परीख (बोडेली), श्री हसमुखभाई खख्खर (राजकोट), श्री कांतिभाई पावागढ़ी (वढवाण), श्री रमेश भाई श्रोफ (सुरत), श्री डाह्याभाई कंसारा (राजकोट), श्री वल्लभभाई शाह (बड़ौदा), श्री जयेन्द्रभाई राजपरा (जुनागढ़), श्री वामन भाई (बड़ौदा), श्री वैकुंठ भाई

भगत (भरुच), श्री चन्द्रकान्त भाई पटेल (बड़ौदा), श्री डॉ. पियुष भाई (भरुच), श्री हरेन्द्र भाई शेठ (दाहोद), श्री एन. जी. बेटरीवाला (नवसारी), श्री पी. टी. शाह (मालवण-बड़ौदा), श्री मणीभाई शाह (धनसुरा), श्री मणिभाई एस. शाह (धनसुरा), श्री सी. पी. तलाटी (हालोल), श्री मनहरभाई कान्ट्रक्टर (गोधरा), श्री नंदुभाई वी. शाह (गोधरा), श्री गोपाल भाई शाह (आणंद), श्री जयंतिभाई सोनी (कपड़वंज), श्री वीजुभाई शाह (कर्णावती), श्री माकंड भाई धोलकिया (जामनगर), श्री जयंतीभाई चोकसी (कर्णावती) ।

(१९) कार्यकर्ता शिबिर - बम्बई, द्वारका और सोला ।

(२०) प्रादेशिक प्रतिनिधि सम्मेलन / अधिवेशन - राजकोट, बड़ौदा, सुरत ।

(२१) पूर पीड़ितों को सहाय - जुनागढ़ विस्तार के ३० गाँवों में तीन लाख रुपये की सहायता की गई । १९९० में बड़ौदा, खेड़ा और पंचमहल में अतिवृष्टि के समय सहायता दी गई । मोटी झेर (कपड़बंज) गाँव में आं. रा. पु. वै. परिषद और पू. इंदिरा बेटीजी सुवर्ण जयंती महोत्सव ट्रस्ट के संयुक्त उपक्रम में २०० किट (स्टिल के बरतन - २ थाली, २ वाडकी, चादर, चौरसा, बालटी और प्रसाद) का वितरण पू. इंदिरा बेटीजी के वरद् हस्तों द्वारा किया गया । ब्रह्मलीन पू. डोंगरेजी महाराज को भावांजलि - सेवा संकल्प दिन-निमित्त डबका (पादरा) के ३०० कुटुंबों में प्रत्येक कुटुंब को १० किलो गेहूं, और २ किलो सुखड़ी का वितरण पू. गो. श्री द्वारकेशलालजी महोदय के पुनीत हस्तों द्वारा कराया गया ।

(२२) अकाल के समय - गौ-सेवा और मानव-सेवा । करीबन १६० केम्प के सहाय, २५ लाख किलो घास, २५ हजार किलो अनाज और ३० हजार किलो सुखड़ी और खाद्यान्न का वितरण । पू. श्री वल्लभाचार्य निरण केन्द्र की स्थापना ।

(२३) दंगा-ग्रस्त विस्तारों में सहाय - वीरपुर में निराधार कुटुंबों की सहाय, गृहोपयोगी साधनों का वितरण, आर्थिक सहाय, पू. योगेशभाई शास्त्रीजी की प्रेरणा से सिलाई मशीन का वितरण । कर्णावती में अनाज और द्रव्य की सहाय, अस्पतालों में फलों का वितरण, जम्मु-कश्मीर के निराश्रित बंधुओं को रुपये १२,५००/- की सहाय।

(२४) प्रकाशन-सहाय - केन्द्र द्वारा प्रथमेशजी स्मृति ग्रंथ प्रगट होने जा रहा है । परिषद ने उसमें आर्थिक सहयोग दिया ।

(२५) श्री रामशिला पूजन - विश्व हिंदू परिषद द्वारा श्री रामशिला पूजन के कार्यक्रम में प्रत्येक शाखा ने सक्रिय सहयोग दिया । श्री राम मंदिर निर्माण कार्य में आं. रा. वै. परिषद ने हुतात्माओं के स्वजनों को सहाय करने के लिए परिषद् को रुपये १२,०००/- का आर्थिक सहयोग दिया ।

(२६) वैष्णव विश्व के प्रश्नों की समस्याओं और सफलता - आचार्यश्री का टीकारुप 'नर्मद

का जमाना' पाठ था, उसमें से टीकात्मक अंश हटाने में सफलता प्राप्त की। श्री यमुनाजी का प्रदूषण रोकने और उसे दूर कराने के लिए प्रधान मंत्री और सांसद सदस्यों से मुलाकात की, आंशिक सफलता मिली । श्रीमद् वल्लभाचार्य का जीवन-वृतांत का पाठ्य पुस्तक में पुनः समावेश हो जिसके लिये प्रयास और अंत में उसमें सफलता मिली । ब्रज भूमि में यात्रियों की सुविधा के लिए रास्तों का समार काम, पानी, बिजली, दवाईयां इत्यादि उपलब्ध हो, जिसके लिए केन्द्र और राज्य सरकार को निवेदन-पत्र दिया गया । भैया-दूज स्नान के लिए विशेष गाड़ी की सुविधा हो जिससे यात्रीगण मथुरा पहुँच सके ऐसा निवेदन किया गया और आंशिक सफलता भी मिली ।

(२७) परीक्षा सहयोग - अखिल भारतीय बाल शुद्धाद्वैत संसद-सुरत द्वारा जो परीक्षाएं ली जाती है, उनका संचालन पू. श्री मधुसुदन शास्त्रीजी सुचारु रुप से कर रहे हैं । परिषद् इसमें सहयोग देती है ।

(२८) धर्म प्रचार भक्ति वर्धिनी - धर्म प्रचार के लिए वाहन खरीदा गया है, उसे भक्ति वर्धिनी नाम दिया गया है । अब तक ६०,००० कि.मी. का प्रवास हो चुका है। शाखाओं का संपर्क, समिति की रचना, नई शाखाओं की स्थापनादि का कार्य वेग से हो रहा है। कार्य में गति आई है ।

(२९) दृश्य-श्राव्य केसेट - श्री वीजुभाई एम. शाह, संयोजक हैं । इस विभाग की बहुत ही अच्छी प्रगति हुई है ।

(३०) प्रदेश कारोबारी - कार्यकर्ता बैठक - कारोबारी सभ्य, हर एक शाखा के एक-दो प्रतिनिधि और आमंत्रित सभ्य इत्यादि महानुभावों को बुलाकर जीवंत सम्पर्क रखा जाता है । समय-समय पर विभिन्न स्थानों में बैठकें होती हैं । बैठक का अहेवाल हर एक शाखाओं में भेजा जाता है । हर एक वर्ष हिसाब का ऑडिट कराया जाता है। बैठक में हिसाब पेश किया जाता है ।

गुजरात प्रदेश में - २३ संरक्षक सभ्य, २०० आजीवन सभ्य, २००० (आर्थिक निधि के) वार्षिक सदस्य, और ३५००० सामान्य सदस्य हैं । परिषद् ने इन कार्यों के अतिरिक्त विगत दशक में अन्यान्य प्रासंगिक कार्य भी किये हैं । सबसे अधिक सहयोग संगठन मंत्री प्रा. चीमन भाई एम. शेठ का रहा है । उनका सतत प्रवास, पत्र-व्यवहार और चिंतन का यह सुफल है । पू. गो. आचार्यगण, शास्त्री वृंद, कार्यकर और वैष्णवों को जोड़ती कड़ी है । उनकी व्यावहारिक कुशलता, सहिष्णुता और बुद्धि चातुर्य के परिणाम स्वरूप गुजरात में कार्यकरों का समूह निर्माण हुआ है । परिषद् के कर्मठ, निष्ठावान, अनुभवी प्रमुख ईन्द्रकान्त भाई शेठ और मंत्री प्राचार्य श्री वी. पी. परीख का सहयोग मिल रहा है । इन महानुभावों के कारण गुजरात का कार्य निरंतर बढ़ रहा है, बढ़ता ही रहेगा।

संकलन - गोपाल भाई शाह (आणंद)

प्रथमपीठाधीश्वर गोस्वामी (नि.ली.)
१०८ श्री रणछोड़ाचार्यजी "प्रथमेश जी'